E content for the student of Patliputra University

Subject - Political Science

Class B.A.(Hons.) Part-III Paper VI

Topic - Plato on Ideal state

Dr. Umesh Chandra Shukla
Associate Prof. Pol. Sc.
R.R.S. College, Motcama

प्रायः सभी राजनीतिक चिंतकों ने राज्य पर अपना विचार व्यक्त किया है। राज्य राजनीति विज्ञान का प्रतिपाद्य विषय है। इसलिए यह स्वाभाविक भी है। प्लेटो ने अपनी पुस्तक Republic में राज्य संबंधी अपने विचारों का विवेचन किया है।

प्लेटो ने यह स्पष्ट कर दिया है कि उसके राज्य संबंधी विचार एक आदर्श राज्य की परिकल्पना पर आधारित हैं। अर्थात वह व्यवहारिकता की कसौटी पर खरा उतर नहीं सकता है। आदर्श का अर्थ ही है जिसे व्यवहार में प्राप्त नहीं किया जा सके। प्लेटो के अनुसार इसके बावजूद आदर्श का महत्व है। आदर्श हमारे लिए उस तारे के समान है, जिस ओर पूर्ण रूप में पहुंचा नहीं जा सकता तो भी उस दिशा में बढ़कर कुछ अच्छाई को तो प्राप्त किया ही जा सकता है। जीवन का आदर्श, समाज का आदर्श, राज्य का आदर्श तो कुछ न कुछ होना ही चाहिए, भले ही वह पूर्ण रूप में प्राप्त हो या नहीं। तभी अच्छाई, बेहतरी, विशिष्टता की ओर बढ़ा जा सकता है। प्लेटो का आदर्श राज्य इसी परिकल्पना पर आधारित है।

प्लेटो ने अपने राज्य को निम्न निर्धारक तत्वों पर आधारित किया है। इसके विश्लेषण में ही उसके आदर्श राज्य की समस्त परिकल्पना स्पष्ट हो जाती है।

1. न्याय - प्लेटो ने ऐथेंस तथा अगल-बगल के देशों में प्रचलित न्याय सिद्धांत को स्वीकार नहीं करता है। उसकी मान्यता है कि व्यक्ति तीन तत्वों की प्रधानता के आधार पर अलग-अलग चरित्र का होता है। वे हैं- विवेक, साहस और क्षुधा। विवेक तत्व की प्रधानता वाले, ज्ञानी, विवेकशील होते हैं अतः शासकीय कार्यों के लिए ऐसे लोग उपयुक्त होते हैं। प्लेटो इन्हें शासक वर्ग के अन्तर्गत रखता है। जिनमें साहस तत्व अधिक होता, वे वीर, चुनौती स्वीकार करने वाले, युद्ध कला में निपुण होते हैं। प्लेटो उन्हें सैनिक वर्ग में रखता है तथा राज्य की रक्षा का दायित्व इसी वर्ग पर होता है। क्षुधा तत्व की प्रधानता वाले वर्ग को प्लेटो उत्पादक वर्ग में रखता है। जिनका कार्य उत्पादन तथा व्यावसायिक कार्य के माध्यम से राज्य के लोगों की आवश्यकता को पूरा करना होता है।

प्लेटो गुणों तथा तत्वों की प्रधानता के आधार पर तीनों वर्गों में समाज को विभक्त करता है संभवतः उसके दृष्टिकोण भारतीय प्राचीन साहित्य के सतो, रजो तथा तमो गुणों की अवधारणा पर आधारित हों।

प्लेटो का न्याय के संबंध में यही कहना है कि तीनों वर्ग के लोग अपने-अपने निश्चित दायित्वों का निर्वाह करें, दूसरे वर्ग के कार्यों में हस्तक्षेप न करें, यही न्याय है। इनका कहना है कि इससे हर वर्ग के लोगों को अपने क्षेत्र के कार्यों में दक्षता आयेगी तथा टकराव भी नहीं होगा।

2. शिक्षा - प्लेटो अपने आदर्श राज्य के लिए एक लम्बी शिक्षा योजना प्रस्तुत करता है। उसके अनुसार बच्चे को छः वर्ष की उम्र तक समाज के नायकों से संबंधित अच्छी अच्छी कहानियाँ सुनानी चाहिए। 6 वर्ष से 18 वर्ष तक

बच्चे को संगीत तथा व्यायाम की शिक्षा देनी चाहिए। उनके अनुसार जहां व्यायाम शरीर के विकास के लिए आवश्यक है, वहीं मानसिक विकास के लिए संगीत आवश्यक है। प्लेटो व्यायाम तथा संगीत शब्द का उपयोग व्यापक अर्थ में करता है जिसमें शरीर विज्ञान तथा साहित्य आ जाता है। 18 वर्ष से 20 वर्ष तक बच्चे अनिवार्य सैन्य शिक्षा का प्रशिक्षण प्राप्त करेंगे। 20 वर्ष से 35 वर्ष की आयु तक विद्यार्थी, गणित, ज्यामिति, दर्शन, अंतरिक्षशास्त्र जैसे गहन विषयों की शिक्षा प्राप्त करेंगे। इसके बाद वे शासकीय कार्यों के दायित्व सम्भालने के लिए नियुक्त किये जाते हैं। पुनः 35 वर्ष से 50 वर्ष तक उनकी शिक्षा जारी रहेगी। यह काल उनके प्रशिक्षण तथा अनुभव पर आधारित शिक्षा प्राप्ति का होगा। इन्हीं में से दार्शनिक शासक चयनित किये जायेंगे। प्लेटो यह नहीं बतलाता है कि उत्पादक वर्ग के लिए शिक्षा का क्या प्रबंध होगा ?

3. <u>साम्यवादी योजना</u> - प्लेटो दार्शनिक शासकों को उस उच्च कोटि में रखना चाहता है जिसमें उसपर कभी कोई दाग न लग सके। वह जानता है कि "कंचन" और "कामिनी" दोनों ही शासकों को भ्रष्ट करते हैं। इसलिए प्लेटो अपने आदर्श राज्य के शासकों को इन दोनों से मुक्त रखने के लिए अपनी साम्यवादी योजना प्रस्तुत करता है। इसके लिए वह संपत्ति का साम्यवाद तथा पत्नियों के साम्यवाद की योजना प्रस्तुत करता है।

प्लेटो के अनुसार शासक वर्ग के लोगों को अपनी संपत्ति नहीं होगी। कोई बैंक बैलेंस, सोना-चाँदी, जमीन जायदाद, मकान व्यापार आदि से वे वंचित होंगे। इनका सारा खर्च राज्य के द्वारा चलाया जायेगा। राज्य द्वारा उनके लिए जो भी प्रबंध किया जायेगा, उसी में उन्हें गुजर बसर

करना होगा। इस प्रकार संपत्ति के लिए सत्ता के दुरुपयोग की संभावना को भी प्लेटो समाप्त करने का प्रयास करता है।

किन्तु प्लेटो इतना ही से संतुष्ट नहीं है। वह समझता है कि शक्ति के दुरुपयोग एवं भ्रष्टाचार का एक प्रमुख कारण परिवार भी होता है। इसलिए प्लेटो परिवार रूपी संस्था को ही शासक वर्ग के लिए समाप्त करने के पक्ष में है। प्लेटो की योजना में शासक वर्ग विवाह नहीं करेंगे, उनके बच्चे नहीं होंगे, उनका परिवार जैसा कोई चीज नहीं होगा। इन दोनों - संपत्ति के साम्यवाद तथा पत्नियों के साम्यवाद द्वारा प्लेटो शासक वर्ग को भ्रष्टाचार, शक्ति दुरुपयोग, तथा परिवार नियंत्रण के आरोपों से मुक्त करना चाहता है।

वह शासक वर्ग के लोगों के लिए सामूहिक अस्थाई विवाह कैम्प की योजना प्रस्तुत करता है, किन्तु उसमें जन्म लेने वाले बच्चे का लालन-पालन राज्य द्वारा किया जायेगा, वे अपने माँ-बाप को नहीं जान सकेंगे, न ही माँ-बाप अपने संतान को। प्लेटो इसे संतति सुधार योजना बतलाता है। इससे योग्य माँ-बाप की संतानों का लाभ राज्य को मिलेगा।

5. <u>दार्शनिक शासक</u> – प्लेटो अपने आदर्श राज्य के लिए दार्शनिक शासक का प्रबंध करता है। 50 वर्ष की उम्र तक उच्च शिक्षा एवं प्रशिक्षण से तपे तपाये, विवेक तत्व की प्रधानता तथा जो संपत्ति तथा परिवार से वंचित जीवन यापन पर निर्भर हों को ही राज्य संचालन का प्रबंध किया जायेगा। Plato इन्हें दार्शनिक शासक (Philosopher King) कहता है। प्लेटो के अनुसार –

Until Philosophers are Kings and Kings and Princes of the World have the Power and Spirit of Philosophy, Cities will never have rest from their evils.

इस प्रकार प्लेटो के आदर्श राज्य की परिकल्पना उसकी मौलिक अवधारणा है। उसका उद्देश्य राज्य को बुराईयों से मुक्त रखना तथा योग्यों के हाथों में सत्ता की बागडोर देना है। आलोचकों की नज़र में इसमें अनेक खामियाँ, त्रुटियाँ तथा अव्यवहार्यता है। यह सच है कि यह व्यवहारिक नहीं है। फिर भी वर्तमान व्यवस्थाएँ जब तक भ्रष्टाचार तथा अकुशल शासकों के आक्षेपों से मुक्त नहीं हो जाती। तब तक प्लेटो के आदर्श राज्य की अवधारणा की प्रासंगिकता बनी रहेगी। यह हमें खामियों से युक्त व्यवस्था के विरुद्ध जागरूकता पैदा करने की प्रेरणा देती रहेगी।